प्रथम धर्म रक्षक

शोगी अफन्दी

के निधन के बाद

सन् १९५७ में

लखनऊ (भारत)

की

स्थानीय आध्यात्मिक सभा

का

अनोखा कदम

भारत के परंपरागत (ऑर्थोडोक्स) बहाई का अस्थायी राष्ट्रीय बहाई मन्डल

Preface to the First Hindi Edition

It is not even a year since the third edition of the book **"UNIQUE ACTION OF THE LOCAL SPIRITUAL ASSEMBLY OF LUCKNOW AFTER THE DEMISE OF THE FIRST GUARDIAN, SHOGHI EFFENDI IN 1957"** was published. This has more than justified that we expressed that the book would received by all lovers of truth as a beacon light amidst the Bahais and the mental crisis which the Faith is passing through it. It has generated intense interest in the minds of the Bahais.

Looking into the demands of Hindi readers it was but necessary to have this book translated into Hindi Language.

We constantly look forward to an ever- increasing appreciation of the book and the priceless treasure of ACTION FOR THE SAKE OF TRUTH embodied in the book by an ever-widening circle of Bahai readership.

Publisher.

First edition
Azamat, B.E. 163 (May, 2006)

Copies : 1000

Published by :
National Teaching Committee of the Orthodox Bahá'ís of India

Under the Guidance of :
THE PROVISIONAL NATIONAL ORTHODOX BAHÁ'Í COUNCIL OF INDIA

P.O. Box 54, Vasai Road,
District : Thane - 401202
Maharashtra, INDIA
E-mail : parikhsec@yahoo.com
Website : www.bahaisorthodox.com

विषय सूची

१.	Baha'i Terminologies	४
२.	प्राक्कथन (Foreward)	५
३.	परिचय (Introduction)	६
४.	द्वितीय धर्म रक्षक, चार्ल्स मेसन रेमी की लखनऊ-सभा के पत्र पर प्रतिक्रिया (Comment)	८
५.	लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा (LSA) द्वारा लिखा गया मूल पत्र	१०
६.	तृतीय धर्म रक्षक, जोएल बी मारेन्जेला की भारतीय बहाइयों को अभ्यर्थना (Appeal)	१३
७.	लखनऊ के स्थानीय परंपरागत (Orthodox) बहाई मन्डल की ओर से उद्घोषणा (Announcement)	२२
८.	भारत के परंपरागत (Orthodox) बहाइयों के प्रकाशन	२३
९.	परंपरागत (Orthodox) बहाइयों के धर्म की वेबसाइट्स	२४
१०.	परंपरागत (Orthodox) बहाई घोषणापत्र (Declaration Card)	२५

Baha'i Terminologies

१.	धर्म रक्षक	Guardian
२.	स्थानीय अध्यात्मिक सभा	Local Spiritual Assembly
३.	धर्मभुजा	Hand of Cause
४.	वसीयत और शासन पत्र	Will and Testament
५.	प्रशासनात्मक आदेश	Administrative Order
६.	विश्व न्याय मंदिर	Universal House of Justice
७.	सर्वोच्च मंडल	Supreme Council
८.	दैवी अधीकार	Devine Right
९.	संविदा	Covenant
१०.	परिपूर्ण स्थापत्यकार	Perfect Architect
११.	उत्तराधिकारी	Successor
१२.	राष्ट्रीय	National
१३.	अंतर्राष्ट्रीय बहाई मंडल	International Baha'i Council
१४.	भ्रूणीय	Embryonic
१५.	पवित्र और अमर्त्य	Sacred and Immortal
१६.	धर्म केन्द्र	Centre of Cause
१७.	आश्चर्यजनक प्रणाली	Wondrous Syste,

प्राक्कथन (Foreward)

महान लोगों ने महान सिद्धियाँ प्राप्त कीं उसका कारण सिर्फ बाह्य सहायता नहीं, बल्कि उनके आंतरिक गुणों से, जो एक मार्गदर्शक प्रकाश से सभी पीढ़ियों को, उनके जीवन को भव्य और अनंत जीवन के लिए उजागर किया.

जब धर्मरक्षता का द्वार बन्द करनें हेतु संविदा भंग करनेवालों ने बहाई विश्व को हिला दिया था, तब उस समय मैसन रेमी ही एक ऐसा महापुरूष था जिसने बहाई धर्म के बेड़े को किनारे पर लाने के लिए कप्तानपद संभाला था. उस समय आर्जेन्टिना, कैमेरून, फ्रान्स, इटाली, स्वित्ज़र्लैन्ड और भारत के बहाई समूह उसके साथ थे.

हममें से बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि भारत में इस सत्य का झंडा ऊँचा उठाये रखने का काम लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा (Local Spiritual Assembly) ने किया था. इसने संविदा (Covenant) भंग करनेवालों का अनुसरण करने से इन्कार कर दिया था और द्वितीय धर्म रक्षक (Guardian) मान्य होने तक अपनी सभा का विसर्जन कर दिया था.

यह पुस्तक बहाउल्लाह में विश्वास रखनेवालों को अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी. जिससे के वे इर्दगिर्द की परिस्थितियोंको जान सकेंगे, लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा लिए गये साहसी निर्णय. शायद यह एक कारण होगा जिससे भारत को कई स्थानीय बहाई मन्डलों सहित अस्थायी राष्ट्रीय बहाई मन्डल के गठन का आशीर्वाद दिया गया है.

अभिस्वीकृति (Acknowledgement)

भारत का अस्थायी राष्ट्रीय बहाई मन्डल इस पुस्तक को मुद्रित स्वरूप देने के प्रयासों के लिए राष्ट्रीय शिक्षण समिति के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करता है.

हम जोएल जानी मारेन्जेला के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस लेख को अपने वर्तमान स्वरूप में इन्टरनेट पर प्रस्तुत करने का प्रबंध किया.

हम युनाइटेड स्टेट्स की पी.एन.बी.सी. के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहते हैं, जिनकी सहायता और प्रोत्साहन के बिना इस प्रकाशन का इस रूप में आना संभव न था. हम सदैव उनसे अभिप्रेरणा और प्रोत्साहन की अपेक्षा रखते हैं.

अंत में हम अपने प्रिय तृतीय धर्म रक्षक जोएल बी मारेन्जेला के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिनकी अभ्यर्थना सभी सत्य प्रेमियों को और जो सत्य की स्वतंत्र खोज में विश्वास रखते हैं, उन सब को प्रभावित करेगी और जिनके प्रति बहाई विश्व सदा ऋणी रहेगा.

अभ्यर्थना (Appeal)

हम अपनी इस विनम्र सेवा के साथ विश्वव्यापी बहाई समुदाय से और विशेष रूप से भारत में बसनेवाले बहाइयों से अभ्यर्थना करते हैं कि वे इस पुस्तक को प्रार्थना चित होकर और शुद्ध हृदय से, सारे पूर्वग्रहों को दूर रखकर पढ़ें और सत्य की स्वतंत्र खोज में इसमें दर्शाये सिद्धान्तों का अनुसरण करें. सत्य स्पष्ट हो जाने के बाद लखनऊ के स्थानीय आध्यात्मिक सभा के उदाहरण का अनुसरण करने में हिचकिचाहट न करें, परंपरागत बहाई धर्म के साथ जुड़ जाएँ तथा तृतीय धर्म रक्षक को बहाउल्लाह के विश्व आदेश को प्रस्थापित करने में सहायता करें.

भारत का अंतरीम राष्ट्रीय बहाई मन्डल

परिचय (Introduction)

लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सातों सदस्यों को आभा साम्राज्य में अपनी सत् सेवा का फल मिलता ही होगा. वे न सिर्फ भारत के बहाइयों को आवाज़ देते हैं, बल्कि सारे विश्व के बहाइयों को अपने उदाहरण का अनुसरण करने, बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा के लेखन को महत्व देते हुए धर्मरक्षक विहीन संगठन से नाता तोड़ने, सत्य धर्म में यानी परंपरागत बहाई विश्वास में शामिल होने एवं बहाउल्लाह के विश्व आदेश को प्रस्थापित करने के लिए तृतीय धर्म रक्षक प्रिय जोएल बी. मारएन्जेला की सहायता करने के लिए आवाज़ देते हैं।

संघर्ष और विरोधाभास के इस समय में भारत को यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है कि वह विश्व को प्रकाश प्रदान करे; भारत समग्र विश्व को भाईचारे का संदेश देने के लिए मशालची बने. भारतीय संस्कृति में पुन: यौवन प्राप्त करने की क्षमता है, और सातत्य की हानि उठाये बगैर वह आध्यात्मिक परिवर्तन कर सकता है. भारतीय लोग, हालाँकि कुछ धीमे आगे बढ़नेवाले लोग हैं, परंतु उनमें युवा शक्ति और जीवन सत्त्व है और उन्होंने सत्य के लिए प्यार की बुनियादी मानवीय वृत्ति बचाये रखी है. उनकी अंत:वृत्ति वास्तविकता के प्रभाव के प्रति बिना चूके प्रतिक्रिया देती है. ये लोग परिवर्तन लाने में समर्थ हैं, ऊपर से लादकर नहीं, मजबूर करके भी नहीं, बल्कि शैक्षणिक प्रक्रिया एवं आध्यात्मिक शुध्दिकरण द्वारा. ये परिवर्तन को आत्मसात करने में सक्षम हैं.

हममें से बहुत से लोग इस तथ्य को जानते हैं कि लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभाने १९५७ में शोगी अफन्दी के निधन के बाद सत्य के लिए प्रेम की अत्यंत बुनियादी मानवीय वृत्ति के लिए वीरता पूर्वक दृढ कदम उठाया और अब्दुल -बहा की इच्छा एवं धर्मादेश के प्रति वफादारी प्रदर्शित की. इसके लिए उसने दस (पर्शियन) ईरानी धर्मभुजा के आदेश को मानने से इन्कार कर दिया, ये लोग अपने तरंगी विचारों एवं इच्छाओं को बहाउल्लाह के धर्म पर लादने का षडयंत्र रच रहे थे. ये पर्शियन धर्मभुजा लादने और मजबूर करने की नीति के अनुसरण में पवित्र नाम को बदनाम करने पर तुले थे.

यह जाना-माना सत्य है कि जब मनुष्य किसी गुप्त षडयंत्र रचने की नीति के अनुसरण में लग जाते हैं, ईरानी घर्म भुजाएँ, उनकी सब से प्रथम बैठकसे ही अपराधबोध से

ग्रस्त थे. यह बैठक अक्का में शोगी अफन्दी के निधन के बाद हुई थी, इसमें उन लोगों ने अपने आपको सत्य से वंचित कर दिया था और वे अज्ञान के मायाजाल में फंस गये थे. उन्होंने शैतानी अस्थिरता एवं अहंकार को विकसित किया था, जो अपने आपको ज्ञान और शक्ति दोनों में परिपूर्ण घोषित करता है.

लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा (Local Spiritual Assembly) इस मजबूर करनेवाली नीति को मानने से दूर रही और ९वीं नवम्बर १९५७ को सभा के सात सदस्यों की उपस्थिति में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें यह तय किया गया कि धर्म का अगला धर्म रक्षक नियुक्त होने तक इस स्थानीय आध्यात्मिक सभा की गतिविधियाँ निलंबित रहें।

द्वितीय धर्म रक्षक (Second Guardian), चार्ल्स मेसन रेमी की लखनऊ-सभा के पत्र पर प्रतिक्रिया

(http://Bahai-Guardian.com/daily.observe.html#_Toc415050698)

आज दोपहर (१२ फरवरी १९५९) को यहाँ पवित्र भूमि में धर्म भुजा के हम सात वर्तमान कस्टोडियनों की बैठक हुई, जिसमें कई बातों की चर्चा हुई -यात्रियों के आने-जाने का ब्यौरा, रोज़मर्रा की सारी गतिविधियाँ और भारत के लखनऊ की स्थानीय सभा से आया पत्र बिना किसी टिप्पणी के टेबल पर रखा गया था, कोई कह रहा था कि वह स्थानीय समस्या है इसलिए इस बात को भुजा के समक्ष न रखा जाए, बल्कि भारत की राष्ट्रीय सभा के विचाराधीन रखा जाए.

टेबल पर पड़े हुए पत्र को देखकर मैं चौंका और उसकी विषय सूची को पढ़कर सचमुच आश्चर्य चकित रह गया. वह स्थानीय सभा द्वारा उठाये गये कदम का अहवाल था, जिसमें नौ में से सात सदस्योंने सर्व सम्मति से नया धर्म रक्षक नियुक्त न होने तक स्थानीय संस्था को विसर्जित किया. यह पत्र (जिसकी यह प्रतिलिपि थी, १८ नवम्बर १९५८ को लिखा गया था और पवित्र भूमि में भुजाओं को संबोधित किया गया था) नई दिल्ली में भारतीय राष्ट्रीय सभा को भेजा गया था. यह शब्द - विवरण सचमुच अत्यंत महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय था, (एक ही कागज़ पर छ: छोटे परिच्छेदों में) वे कारण लिखे थे कि ये मित्र बिना धर्म रक्षक के धर्म की वर्तमान स्थिति को क्यों स्वीकार नहीं कर सकते . इस स्थिति में उनके सामने एक ही रास्ता था कि वे धर्म के प्रथम धर्म रक्षक शोगी अफन्दी द्वारा की गई वसीयत के अनुसार पुन: जबतक धमर्करक्षक नियुक्त न हो, उस समय तक स्थानीय सभा कार्यरत न हो और वे अपनी सभा को विसर्जित कर दें.

इसमें मैंने प्रमुख और महत्त्वपूर्ण मुद्दों का संक्षिप्त विवरण पाया. मैंने भुजाओं से प्रार्थना की कि वे इस पर ध्यान दें. क्योंकि अत्यधिक बहुमत होने पर भी वे कुछ नहीं कर रहे थे.

लखनऊ के ये सज्जन, जिन्होंने उस पत्र को लिखा था वे सचमुच स्पष्ट चिंतक हैं, जैसे कि जर्मन राष्ट्रीय सभा के सदस्य - यह शब्द विवरण लेखन का उत्कृष्ट नमूना है, अपनी

छाप छोड़ने में सर्वाधिक अंतिमवादी (इससे अधिक अंतिमवादी घोषणा हो नहीं सकती) परन्तु उसकी बुनियाद इतनी पक्की है जैसी मास्टर अब्दुल-बहा की वसीयत और शासनपत्र की बुनियाद. इसने मुझे भुजा के कस्टोडियन द्वारा प्राप्त अन्य प्रतिवादों या विरोधोंसे अधिक आशा दिलाई के धर्मरक्षकत्व को समाप्त करने के कदम का विरोध किया जाए जो दैवी प्रकृति का है, और उसकी जगह वर्तमान मानवीय संगठन को मान्यता दी जाए.

अब्दुल - बहा द्वारा अपनी वसीयत और शासनपत्र में वर्णित बहाई प्रशासनात्मक आदेश की संस्था का रेखांकन

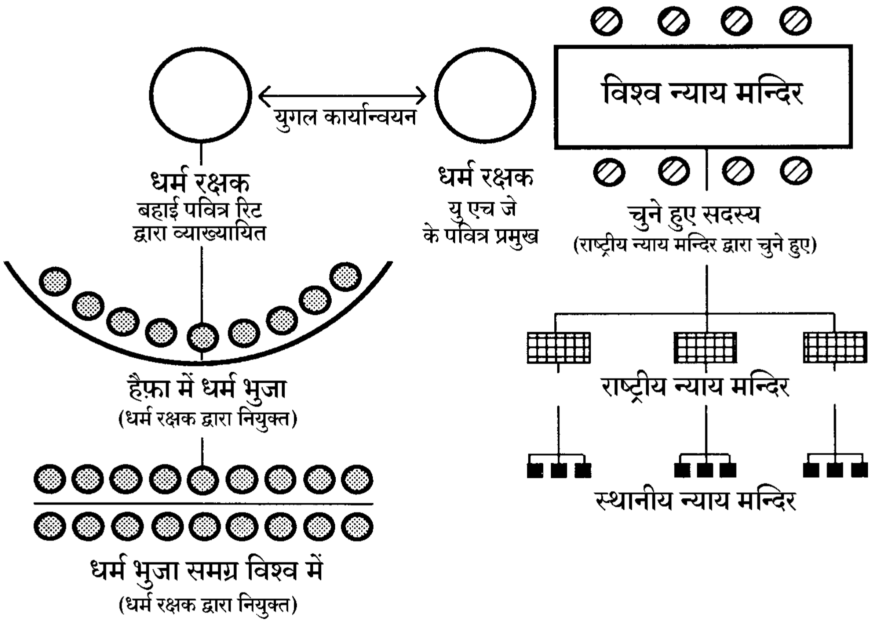

"जुड़वाँ स्तम्भ जो इस सशक्त प्रशासनिक ढाँचे को सहारा देते हैं - धर्मरक्षकत्व की संस्था और विश्व न्याय मंदिर"

अब्दुल-बहा की वसीयत और विधान, जो साथ मिलकर किताब -ई-अकदस (परम पवित्र पुस्तक) .... ये एक संपूर्ण इकाई के अविभाज्य अंग हैं.

(उपर्युक्त अवतरण बहाई धर्म के प्रथम धर्मरक्षक शोगी अफन्दी के लेखन से लिए गये हैं)

लखनऊ की स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा लिखा गया मूलपत्र

(धर्म रक्षक की वेब साइट निम्न लिखित, से http://Bahai-Guardian.com/Question.html)

दिनांक ९वीं नवम्बर १९५७ को सभा (स्था. आ. सभा लखनऊ) के सात सदस्यों की उपस्थिति में पारित प्रस्ताव

पंजीकृत सोसायटी क्रमांक १४१, नवम्बर १८,१९५८ (उ.प्र. भारत) रफ्फानियन स्था. आ. सभा (लखनऊ) हाइफा, इज़राईल

९वीं नवम्बर, १९५७ को सभा के सात सदस्यों की उपस्थिति में प्रस्ताव पारित किया गया तदनुसार, यह पारित किया गया कि स्थानीय आध्यात्किम सभा की गतिविधियाँ धर्म के अगले धर्म रक्षक की नियुक्ति तक निलंबित की जाए और इसे राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा नई दिल्ली को भी सूचित किया गया था. और यह सर्वोच्च मन्डल के कार्यक्षेत्र में आता है इसलिए इस सभा के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वह निम्नलिखित दलीलों को बिना पूर्वग्रह ऊपर उल्लेखित सर्वोच्च मंडल के सम्मुख रफ्फानियान, हाइफा (इज़राईल) द्वारा प्रस्तुत करे.

१. मनुष्य की प्रकृति द्विभाजित है; आत्मा और शरीर, और इसलिए वह साथ साथ इस जगत का और स्वर्ग समान नगरी का नागरिक भी है.

२. धर्म संरक्षकत्व की स्थिति इस पृथ्वी पर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है, धर्म रक्षकों के लिए वे न सिर्फ पृथ्वी पर प्रभु के सेनापति हैं और प्रभु के सिंहासन पर बैठते हैं, बल्कि स्वयं ईश्वर द्वारा भी यह देवता कहे जाते हैं. यह जो धर्म रक्षक की शक्ति के रहस्य का संबंध है, वह कानूनन विवादों से परे है, क्योंकि यह ईश्वर की कमज़ोरी खोजने के बराबर है, और उनसे इस रहस्यात्मक पावित्र्य को छीन लेना, ईश्वर के सिंहासन से उन्हें वंचित करना है और यह ईश्वर के कार्य में दखल देना है.

३. धर्मरक्षक के लिए यह आवश्यक है कि उनके क्षेत्र में उनके समान और कोई न हो, क्योंकि ऐसा न करने से उस कानून का इन्कार हो जाएगा जो कहता है कि ''एक समकक्ष को अन्य समकक्षों पर कोई अधिकार नहीं हो सकता.'' उनके ऊपर कोई उच्च अधिकारी या अधिक शक्तिमान हो यह भी संभव नहीं है क्योंकि तब वह अपने सहायकों से नीचा हो जाएगा और ''निम्नकक्षा के लोग सर्वोच्च के समकक्ष हो यह भी संभव नहीं.''

४. धर्म रक्षक की आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वोच्चता संपूर्णतया ईश्वर के हाथ की बात है. सब से महत्त्वपूर्ण यह है कि वह 'अकदस' है, इस अर्थ में कि उसे नहीं हटाया जा सकता और न ही उसे उत्तरदायी माना जा सकता है और उसके पास शेष निम्न अनुशासनात्मक ढाँचे पर सर्वोच्च अधिकार होते हैं, जो अधिकार उसके नियुक्त किये लोगों के पास नहीं होते. धर्मरक्षक के पास धर्म भुजाएँ रचने की संपूर्ण सत्ता है, और वह चुनाव के किसी भी परंपरागत स्वरूप के बिना यह रचना कर सकता है.

५. अकेले धर्म रक्षक के पास ही अनोखी सत्ता होती है, इसलिए कि वह 'दैवी अधिकार' है. वह उसे विशिष्ट सर्वोच्चता प्रदान करता है, पुनरावर्तन की सत्ता और अन्य सभी अधिकारों के स्वरूप पर निरीक्षण की सत्ता, चाहे वह पूजागृह से संबंधित(सेकुलर) हो या बिन-सांपदायिक हो. निष्कर्ष यह कि धर्मरक्षक अकेला संपूर्ण कानूनी प्रणाली का प्रमुख है, बेशक एक वैश्विक अधिकारी के नाते नहीं, किन्तु अंतिम अधिकार की अदालत के नाते जो अपनी अनुपस्थिति में नहीं बल्कि उपस्थिति में कार्य करता है. यह सबूत है कि समुदाय के हाथों या यहाँ तक कि धर्मभुजा के हाथों में भी वे सर्वोच्च अधिकार नहीं सौंपे जा सकते जो विशिष्ट दैवी अधिकार धर्म रक्षक के हैं.

६. वर्तमान पद्धति मैत्रीपूर्ण सामूहिक विचारकों की साँठ गाँठ है और इन साथ बैठकर सोचनेवालों ने बड़ी चतुराई से सत्ता की संगति का सहकारिता से मुक्त करने और आपसी सम्मति से अनुमति देने का एक कदम लिया है. ऐसी एक दलील, इसे लागू करने के मामले में टक्कर में आती है कि कुछ लोगों की इच्छा के अनुसार ईश्वर ने अपने दैवी अधिकार प्रदान करने का तरीका बदल दिया है. ऐसे लोकशाही विचार धर्म

की आत्मा के प्रति अत्याधिक विरोधी हैं. सामूहिक चिंतकों की पद्धति विचित्र ढंग से अतीत और वर्तमान के बीच संतुलन साधने का प्रयास है. जहाँ कहीं पवित्र नाम के दुरुपयोग या शोषण पर अधिकार खड़ा है वहाँ डराने-धमकाने की नीति धारण करनी पड़ती है.

स्थानीय आध्यात्मिक सभा, लखनऊ तब तक निलंबित स्थिति में है जबतक अपने रिक्त सिंहासन पर धर्म रक्षक का आविर्भाव हो.

५१, सुंदरबाग, लखनऊ उ. प्र. (भारत)

मूल पत्र से प्रतिलिपि की गई सी.एम.आर. द्वारा लखनऊ भारत के लेखक का नाम था 'गुप्ता'.

तृतीय धर्म रक्षक जोएल बी. मारेन्जेला की भारतीय बहाइयों को अभ्यर्थना (Appeal)

धर्म के प्रथम धर्म रक्षक शोगी अफन्दी के शासन के ३६ वर्षों के दौरान बहाइयों ने बहाउल्लाह के संविदा और उस संविदा के नियुक्त केन्द्र, अब्दुल बहा के प्रति अपनी अविनाशी वफादारी घोषित की. बहाउल्लाह के निधन के बाद सबने अब्दुल-बहा को न सिर्फ केन्द्र बल्कि पवित्र शब्द के एकमेव भाष्यकार के नाते, परंतु उनके धर्म के सही आदर्श के नाते भी और दैवी ढंग से प्राप्त प्रशासनात्मक आदेश के ''परिपूर्ण स्थापत्यकार'' नाते भी-रुजू किया. एक आदेश जो धार्मिक इतिहास में अनोखा और उनके धर्म का विशिष्ठ लक्षण है. जैसे कि शोगी अफन्दी ने कहा है ''यह आदेश उस दैवी सभ्यता की निश्चित परिपाटी को संविधानबद्ध करता है, जो पृथ्वी पर स्थापित करने के लिए बहाउल्लाह के सर्वज्ञ कानून ने रचना की है. बहाउल्लाह ने स्वयं इस भावी आदेश की बहुत उच्च प्रशंसा की थी कि ''यह अनोखी, यह आश्चर्यजनक प्रणाली है, ऐसी पद्धति मनुष्य की आँखों ने कभी देखी नहीं.''

जैसे प्रत्येक बहाई यह जानता है कि यह अनोखा आदेश अब्दुल बहा की कभी गलती न करनेवाली कलम से अपनी वसीयत और विधान के रूप में लिखा गया है, एक पवित्र और दैवी प्रेरणा से अवतरित दस्तावेज़, जिसका उत्साह पूर्वक स्वागत करते हुए शोगी अफन्दी ने उसे ''संविदा का शिशु'' घोषित किया था. इसके लिए उन्होंने स्पष्टता की : ''रचनात्मक ऊर्जाएँ जो बहाउल्लाह के नियम-कानून से प्रवाहित हुई, वे अब्दुल बहा के दिमाग में अपनी चुंबकशीलता से फैलीं और विकसित हुईं, जिनका बहुत बड़ा प्रभाव और निकटस्थ आत्मीयता थी, जिन्होंने एक उपकरण को जन्म दिया जिसे शायद नये विश्व आदेश के शासन-पत्र (चार्टर) के नाते देख जाएगा, जो उस वक्त एक गौरव और इस भव्य छुटकारे का वचन था. यह वसीयत इस प्रकार जयघोष के साथ स्वीकृत हो सकेगी एक अवश्यभावी परिणाम के स्वरूप में, उस रहस्यात्मक परस्पर व्यवहार के फलस्वरूप, उनके और जिनको उन्होंने संप्रेषित किया उनके बीच अपने दैवी उद्देश्य के प्रभाव का आदान प्रदान करते हुए अपने चुने हुए

ग्रहणशील को उस अमर आदेश का वाहक बनाया. संविदा का शिशु होने से - प्रथम (मूल) सर्जक और ईश्वर के कानून के व्याख्यता दोनों के उत्तराधिकारी के नाते - अब्दुल बहा की वसीयत और शासनपत्र को, जिसने अंतिम रूप से उसे आत्मसात किया, उन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता.'' इसलिए, जैसे शोगी अफन्दी ने लिखा है, इस महत्वपूर्ण क्षण के दस्तावेज़ को ''उनकी इच्छा'' या ''उनकी वसीयत'' मानना चाहिए. इसके अलावा, इस दैवी शासनपत्र के पवित्र लक्षणों का विस्तार से वर्णन करते हुए और सम्मान प्रदान करते हुए शोगी अफन्दी इस दस्तावेज को बहाउल्लाह द्वारा लिखित सब से पवित्र पुस्तक - किताब ई-अकदस का समान दर्जा देते हैं - कहते हैं कि ''इन दस्तावेजों का अध्ययन करने से पता चलेगा कि उन दोंनों में निकट के संबंध प्रवर्तित होंगे.'' और यहाँ तक कि वे दोंनों परस्पर एक दूसरे का सम्मान करते थे इतना ही नहीं, परंतु उन्होंने परस्पर एक दूसरे को स्वीकार कर लिया था और इस संपूर्ण इकाई को अलग करना संभव न था. वे परस्पर के अभिन्न अंग थे.'' उन्होंने आगे कहा है, ''उनकी वसीयत के प्रबंध धर्म की संभावित सुरक्षा कर सकते है जिसके लिए वे दोंनों सारा जीवन भव्य परिश्रम करते रहें.''

अब्दुल-बहा की वसीयत और विधान जैसे उनकी ''भावी पीढ़ियों के लिए दानपत्र'' में स्थापित पवित्र ग्रंथ का एक भाग वर्णित है, इसमें यह स्पष्ट है कि जब तक बहाउल्लाह का प्रदान ज़ारी है इस दस्तावेज़ का एक रत्ती भर भी रद्द करना, बदलना या बढ़ाना संभव नहीं हो सकता है. इसलिए ''इस दैवी अद्भुत प्रदान की रचना, जिसमें विश्व के सर्वोच्च-स्थपति का हाथ लगा है, विश्व के एकीकरण और बहाउल्लाह के धर्म के विश्व व्यापी विजय के लिए की गई है'' जिसे पूरे हज़ार वर्षो तक अपरिवर्तनीय और अनुल्लंघनीय रहना ही चाहिए.

फिर कैसे कोई बहाई जो अब्दुल बहा के दैवी शासन-पत्र (चार्टर) और उसको 'दि मोस्ट हॉलि बुक' के समकक्ष कोटि और दैवी मूल की अपरिवर्त्यता का स्वीकार करने का दावा करके इस धर्म का विश्वासघाती प्रचार फैलानेवालों से मेल बिठाए जिन्होंने धर्म रक्षक के पद का परित्याग किया है और कहा कि ईश्वर ने अब अपना इरादा (बदा) धर्म रक्षक पद को

जारी रखने के बारे में बदल दिया है ? और फलस्वरूप, कार्यान्वयन में, अब्दुल-बहा के शासन-पत्र के उन प्रावधानों को जो बहाई प्रशासनात्मक आदेश की सर्वोच्च संस्थाओं से संबंधित हैं, उन्हें शून्य और नगण्य करार दिया है, और एक ऐसा आरोप लगाया कि प्रशासनात्मक आदेश के प्रारंभ के छत्तीस वर्ष पूरे होने पर भी शोगी अफन्दी ने दैवी शासनपत्र की शर्तों के अंतर्गत अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति नहीं की. यह उसकी अक्षमता या विफलता है.

यह स्पष्ट होना चाहिए, यहाँ तक कि जो बहाई निरीक्षक नहीं हैं कि पूर्ववर्ती के प्राँगण में, इस प्रकार का निष्कर्ष अब्दुल बहा की वसीयत और विधान की अपरिवर्त्यता में बहाइयों की आस्था जो पहले प्रकट हुई थी उसके घोर अस्वीकार से कम कुछ स्थापित न होगा. वास्तव में यह मानना कि शोगी अफन्दी अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने में असमर्थ या विफल रहे उनको बहाउल्लाह के विश्व आदेश का विनाश करने के लिए एक पक्ष के रूप में स्थपित करना है. धर्म रक्षक पद को समाप्त करना. धर्म के हृदय और केन्द्र के साथ प्रशासनात्मक आदेश की दो शेष सर्वोच्च संस्थाओं को भी नष्ट करना है, जो धर्म के जीवित धर्म रक्षक की उपस्थिति पर निर्भर हैं. इनके नाम हैं विश्वन्याय मन्दिर, जिसके ''पवित्र प्रमुख और आजीवन विशिष्ट सदस्य धर्म रक्षक हैं'' और धर्म भुजा, जो सिर्फ उन्हीं के द्वारा नियुक्त किये जाते हैं.

जो लोग शोगी अफन्दी के अनुकूल और शुभ रिकार्ड को जानते हैं, वे उनके शासन काल के दौरान संपूर्ण विश्व में बहाई प्रशासनात्मक आदेश के तंत्र को प्रस्थापित करने के लिए उनके परिश्रम को भी जानते हैं. उस आदेश के विशिष्ट पहलुओं के विषय में उनके विपुल लेखन को देखें तो वे उस सच्चाई का सबूत देंगे कि उनमें उनकी आस्था, श्रद्धा, समर्पण और अब्दुल बहा के विधान के प्रति अविचलित विश्वस्तता और प्रत्येक आज्ञा का वफादारी से पालन करने की जो भावपूर्ण वाक्पटुता थी, उसका प्रमाण मिलता है. उन्होंने उस शासन-पत्र में उत्तराधिकार में दिये सारे आदेशों और उसी प्रकार अब्दुल बहा के अन्य शासन-पत्र ''दि टैब्लेट्स ऑफ दि डिवाइन प्लान'' का अक्षरशः पालन किया है. कोई उनके लेखन-साहित्य

का अनुसंधान करे तो उनमें और उनके बहाई विश्व को दिये एतिहासिक संदेशों में एक भी वाक्य ऐसा नहीं पाएगा जो बहाउल्लाह के प्रदान से आने वाले युगों मे धर्म रक्षक पद के सातत्य और आवश्यकता के अलावा कुछ हो.

वास्तव में अपने इस पवित्र विश्वास के वफादार रहकर शोगी अफन्दी ने धर्म रक्षक पद को जतन पूर्वक सातत्य प्रदान किया और एक समय उन्होंने बहाई विश्व के लिए अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के लिए सार्वजानिक रूप से घोषणा भी की. ऐसा होने पर भी, बहाइयों द्वारा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नियुक्ति को उसी वक्त या शोगी अफन्दी के निधन के बाद भी क्यों मान्यता नहीं दी गई? उत्तर ढूँढना पड़ेगा. अगर सभी बहाई नहीं तो अधिकतर बहाई लोगों द्वारा प्रदर्शित गलत निष्ठाओं और धारणाओं में, कि शोगी अफन्दी अपना उत्तराधिकारी किस प्रकार नियुक्त करते, तथा उनके उतने ही भ्रामक दृष्टिकोण के साथ कि उनके उत्तराधिकारी को कितनी योग्यता प्राप्त करना आवश्यक है. जैसे शोगी अफन्दी की नियुक्ति हुई थी अपने धर्म के सर्वोच्च कार्यालय में अब्दुल बहा की वसीयत और विधान के नियत तंत्र द्वारा उन्होंने अपने आप मान लिया (स्पष्टतः वसीयत की वाक्य रचना की पुन: जाँच किये बिना) कि शोगी अफन्दी अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने के उसी प्रकार का साधन काम में लाएँगे, जबकि उन लोगों ने गहराई से अब्दुल बहा के शासनपत्र की भाषा की गहराई से जाँच की होती तो उनके ध्यान पर आता कि अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करना धर्म रक्षक के लिए अनिवार्य एवं स्वैच्छिक है, ‘‘उनके जीवन काल में... जिससे उनके निधन के बाद मतभेद पैदा न हो’’ इस प्रकार यह स्पष्ट है कि धर्म के धर्म-रक्षक अपने उत्तराधिकारियों की नियुक्ति में प्रशासनात्मक प्रकार के दस्तावेज़ का इस्तेमाल करने से प्रतिबंधित हैं. बहाइयोंने एक उतनी ही गलत धारणा को पकड़ रखा था धर्म रक्षक के उत्तराधिकारी की योग्यता के बारे में. वे मानते थे कि धर्म रक्षक का पुत्र (शोगी अफन्दी की संतान नहीं थी) अथवा बहाउल्लाह के रक्त का रिश्तेदार ही धर्म रक्षक पद पर उत्तराधिकारी बन सकता है. (‘अगसान’ शब्द का गलत अर्थ निकाला गया, जिसे शोगी अफन्दी ने सिर्फ बहाउल्लाह के पुत्र ऐसा परिभाषित किया), जब कि अब्दुल बहा की वसीयत धर्म रक्षक को अनुमति देती है ‘‘अन्य शाखा’’ (पुरुष अनुयायी)

जिसकी आत्यंतिक वफादारी और सेवा बहाउल्लाह के संविदा के प्रति हों - ''संविदा के वृक्ष'' ने उसे उस भव्य गौरवान्वित वृक्ष की आध्यात्मिक''शाखा'' बनने के सुपात्र बना दिया.

इन पूर्वग्रहित विचारों और धारणाओं की वजह से जैसे वे आध्यात्मिक दृष्टि से अंध थे (और अभी तक हैं). यह भी एक छोटा सा आश्चर्य है कि कुल मिलाकर बहाई लोग शोगी अफन्दी द्वारा लिए गये कदमों का महत्त्व समझने के लिए अच्छी तरह तैयार नहीं थे, जैसेकि शोगी अफन्दी ने धर्म रक्षक पद के सात्तत्य को निश्चित करने के लिए और अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति की प्रक्रिया परिपूर्ण करने के लिए जो अनोखा और पटु तरीका अपनाया (सार्वजानिक रूप से, फिर भी परदे के पीछे).

शोगी अफन्दी ने अपने निधन के कुछ पाँच वर्ष पहले, अपने कार्यालय के एक मात्र घोषणापत्र को कैबलग्राम का प्रयोग करते हुए, विशेष रूप से ''पूर्व और पश्चिम की राष्ट्रीय सभाओं को संबोधित करके १ जनवरी १९५१ को जारी किया (भेजा). इस ऐतिहासिक घोषणपत्र में उन्होंने''प्रथम अंतर्राष्ट्रीय बहाई मन्डल के गठन का वज़नदार युग प्रवर्तक निर्णय'', उसके साथ आई ''प्रथम भ्रूणीय अंतर्राष्ट्रीय संस्था'' धर्म के प्रशासनात्मक आदेश की उत्क्रान्ति अत्यंत महत्वपूर्ण मील के पत्थर'' के रूप में उद्घोषित किया. अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण से लेकर आज तक (३० वर्ष पहले). आगे प्रशंसा करते हुए वे इस घटना के बारे में लिखते हैं कि इतिहास अंतर्राष्ट्रीय मन्डल के संविधान का भविष्य में अभिनंदन करेगा ''एक भव्य घटना बहाई धर्म के रचनात्मक युग के द्वितीय युगांतर को प्रकाशित कर रही है, जिसमें उसके प्रदान की संभावनाएँ इतनी अधिक है, कि उसके शासनात्मक आदेश के प्रारंभ से आज तक कोई भी साहस-उपक्रम मात नहीं दे पाया.'' इस ''मील के पत्थर'' की विशेषता यह है कि, वास्तव में शोगी अफन्दी ने अपने घोषणपत्र में भ्रूणीय विश्व न्याय मन्दिर का प्रतिष्ठापन किया था. लेखन में इस बात पर बल देकर कहा था कि वैश्विक कानून में जो प्रत्येक मनुष्य के वृद्धि और विकास की बात है वह क्रमिक है और वह ''भ्रूण में शुरू से सारा पूर्णत्व होता है'' (पृष्ट ३१२-३१३ BWF). यह दैवी और वैश्विक कानून बहाउल्लाह के भ्रूणीय विश्व आदेश के

नैसर्गिक संस्थान पर समान रूप से लागू होता है, और शोगी अफन्दी ने प्रशासनात्कम आदेश की संस्थाओं के विषय में बराबर भ्रूणीय शब्द का प्रयोग किया है और, वास्तव में स्वयं धर्म के बारे में भी कहा है. इसलिए, विश्व न्याय मन्दिर शोगी अफन्दी द्वारा अपने भ्रूणीय स्वरूप में स्थापित हुआ, हालाँकि अंतरिम रूप से उसे अंतर्राष्ट्रीय बहाई मन्डल का शीर्षक दिया गया. ''प्रथम से'' मस्तिष्क और शरीर, दोनों के साथ एक पूरा और संपूर्ण प्रबंध-तंत्र था . इसलिए इस भ्रूणीय प्रबंध-तंत्र के प्रमुख या अध्यक्ष के पद पर शोगी अफन्दी की नियुक्ति का महत्त्व - प्रबंध-तंत्र के न हटाये जा सकनेवाले प्रमुख, जो, जैसे उन्होंने लिखा, चार सफल चरणों द्वारा परिपक्वता की ओर अपने विकास में अग्रसर होगा, और अपने अंतिम चरण में विश्व न्याय मन्दिर के रूप में प्रस्फुटित होगा. सभी बहाई जानते हैं कि अब्दुल बहा की वसीयत और विधान के अनुसार सिर्फ धर्म रक्षक ही ''उस व्यवस्था तंत्र के पवित्र प्रमुख और आजीवन विशिष्ट सदस्य'' के नाते सेवा करता है. इसे इन्कार न किये जा सकनेवाले सत्य के प्रकाश में, शोगी अफन्दी के उत्तराधिकारी की नियुक्ति को मान्यता देने की प्रच्छन्न चाभी छिपी हुई है. इसलिए उन्होंने एक बहाई को जो अब्दुल बहा के प्रारंभिक दिनों से बहाउल्लाह की संविदामान्य अनुलंघनीय सेवामें, समर्पण और वफादारी रखता था, फिर पहले धर्म के विश्व प्रशासन केन्द्र में काम में अपनी सहायता करने के लिए बुलाया. इस भ्रूणीय संस्था का प्रमुख या अध्यक्ष बनाया और उनको हाइफा में स्थायी निवास के लिए बुलाया. महत्त्वपूर्णता से, शोगी अफन्दी ने इस तंत्र के अध्यक्ष पद को स्वयं धारण नहीं किया, न ही उन्होंने अपने द्वारा नियुक्त प्रमुख मैसन रेमी को अपने जीवन के शेष सात वर्षों के दौरान इस भ्रूणीय संस्था को सक्रिय करने के लिए अधिकृत किया; अगर ऐसा किया होता तो यह पूरा प्रशासन तंत्र अपनी भ्रूणीय स्थिति से संपूर्ण सक्रिय जीवन तक अंकुरित, विकसित हो जाता-एक ऐसी स्थिति जिसके लिए अनिवार्य रूप से उनके निधन तक प्रतीक्षा करना पड़ा. इसलिए, संयोगवश उनके निधन के साथ अंतर्राष्ट्रीय बहाई मन्डल, भ्रूणीय अंतर्राष्ट्रीय न्याय मन्दिर - एक सक्रिय कार्यरत प्रशासन संस्था, और चूँकि धर्म रक्षक और अंतर्राष्ट्रीय न्याय मन्दिर के अध्यक्ष, जैसा कि ये दोनों समान पद है; मैसन रेमी अपनेआप धर्म के धर्म रक्षक पद का कार्यभार संभाल लेंगे (अब्दुल

बहा द्वारा नियत नियम के अनुसार एक क्षण भी रूके बिना धर्म रक्षक पद का सातत्य ज़ारी रहना चाहिए). क्योंकि शोगी अफन्दी ने अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति में यह पद्धति अपनाई थी जो वास्तव में सच्ची और सरल थी, जबकि उन्होंने यह नियुक्ति आवश्यकतानुसार ''अपने जीवन काल में'' की और उसी वक्त उन्होंने उद्देश्यपूर्ण ढंग से इस नियुक्ति को इस तरह आड़ में डाल किया कि माननेवालों को स्वच्छ एवं पूर्ण रूप से ज्ञात नहीं हुआ. क्योंकि यदि मानने वाले उस आदमी की नियुक्ति की विशिष्टता को, जो शोगी अफन्दी से पर्याप्त वृद्ध थे, उसके उत्तराधिकारी के नाते, समझ लिया होता तो माननेवालों को लग सकता था कि यह नियुक्ति निकट भविष्य में शोगी अफन्दी की मृत्यु का पूर्वाभास है. सात वर्ष से कुछ पहले उनकी मृत्यु हो गई. बेशक, माननेवालों की ऐसी समझ, समक्ष रूप में (बिना प्रश्न किये) विश्व व्यापी स्तर पर सब को विस्मय में डाल देनेवाला था और इससे माननेवालों में धर्म के भीतर अव्यवस्थित परिस्थितियाँ पैदा हो जातीं. स्पष्ट है कि इसी कारण शोगी अफन्दी ने अपना उत्तराधिकारी इस प्रकार अप्रत्यक्ष पद्धति से चुना था. दु:खपूर्ण यह हुआ कि जो शोगी अफन्दी ने जानबूझकर अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के बारे में जो पर्दा डाल रखा था, वह उनके निधन से उन कारणों से जिनकी रूपरेखा पहले दी जा चुकी है वह धर्म के भविष्य के लिए ऐसी भयानक घटनाओं से और भी अभेद्य हो गया.

शोगी अफन्दी द्वारा छोड़ी गई वसीयत और विधान न मिलने से, जो उन्होंने गलती से सोचा था और उनके पूर्वगृहित विचार, जो ऊपर दर्शाये गए हैं, उनसे अंध होकर धर्मभुजा (एक उल्लेखनीय अपवाद सहित) ने जल्दी में यह निष्कर्ष निकाल लिया कि शोगी अफन्दी ने अपने किसी उत्तराधिकारी का नाम नहीं दिया है इसलिए उन्होंने अपना विश्वास दैवी ढंग से प्राप्त, पवित्र और अमर्त्य, अब्दुल बहा की वसीयत एवं विधान का इनकार कर दिया और चूँकि उन लोगों ने बहुत बड़ी प्रतिष्ठा पाई थी अत: वे साथी माननेवालों की विशाल बहुमती को आसानी से समझाने में समर्थ हो गये और उन्होंने धर्मरक्षक पद का परित्याग कर दिया. और, फिर अविश्वसनीयता से उन लोगों ने 'दैवी कानून'' के स्थान पर जो उस पवित्र

घोषणापत्र में निरूपित संस्थाओ को था अपना खुद का बनाया संगठन बेशर्मी से स्थापित किया, जो अब्दुल -बहा, के ''निपुण हाथों द्वारा परिपूर्ण स्थपति'' हम को अवतरित दैवी शक्ति नियुक्त प्रशासनात्मक आदेश के स्थान पर कमज़ोर और विकलांग, मनुष्य द्वारा निर्मित विकल्प दिया गया.

स्थानापन्न संगठन में उन्होंने रचना की:

१. अब आगे से धर्म रक्षक नहीं है-''धर्म का केन्द्र.''

२. पवित्र धर्म आदेश की व्याख्या करने का अधिकार संपूर्ण रूप से धर्म रक्षक को सौंपा गया था और स्थायीत्व के साथ अनिवार्य रूप से बहाई धर्म का भावी फूट या विच्छेद से संरक्षण करना उनका काम था, यह अब हमेशा के लिए समाप्त हो गया.

३. धर्म भुजा की संस्था के अस्तित्व को समाप्त किया जाता है, क्योंकि सिर्फ धर्म रक्षक ही भुजाओं की नियुक्ति कर सकता है.

४. विश्व न्याय मन्दिर जो १९५१ में शोगी अफन्दी द्वारा उसके भ्रूणीय स्वरूप में अस्तित्व में लाया गया था और साथ में उनके द्वारा उसके ''पवित्र प्रमुख'' नियुक्त किये गये थे, अब बिना धर्म रक्षक द्वारा चालाकी से उनके पैर उखाड़े गये और अब रही धर्म रक्षक विहीन संस्था (बिना मस्तिष्क का शरीर) जिसमें धर्म रक्षक की अनिवार्य उपस्थिति का अभाव है, जो मार्गदर्शन और संरक्षण प्रदान करें. यह निश्चित करने के लिए कि कोई विधि-निर्माण का अधिनियम नहीं बना जो ''अर्थ के साथ विरोध या संघर्ष '' अथवा ''बहाउल्लाह के व्यक्त किए उच्चारणों की आत्मा उनसे अलग'' हो.

इस प्रकार, उसके बाद, धर्म रक्षक के बिना धर्म के डरावने उलझाव हैं बहाउल्लाह का विश्व आदेश -वह ''आश्चर्यजनक प्रणाली'', जो बहाउल्लाह द्वारा व्यक्त हुई और जो

अब्दुल बहा की अचूक कलम से उनकी वसीयत और विधान में लिखी गई. अगर उस दैवी ढंग से प्राप्त आदेश के सर्वोच्च प्रबंध तंत्र को नष्ट कर दिया जाए और उसके स्थान पर मनुष्य द्वारा बनाई त्रुटीपूर्ण संस्थाओं को रख दिया जाए तो वह कभी यथार्थ नहीं बन सकती.

भ्रष्ट मनुष्यों द्वारा बनाया गया धर्म एवं भुजा द्वारा स्थापित प्रबंध प्रणाली की तीव्र असमान तुलना में परंपरागत (ऑर्थोडोक्स) बहाई लोग धर्म के जीवंत धर्म रक्षक पद के पक्ष में वफादार रहे और अब्दुल बहा की वसीयत और विधान में अभिव्यक्त प्रशासन आदेश की संस्थाओं को स्थापित एवं संरक्षित रखने के लिए उन्होंने संघर्ष किया. उन्होंने आशा और प्रार्थना की कि जिन बहाइयों ने ईश्वर के धर्म के धर्म रक्षक पद को समाप्त करने के लिए बहाइयों को उकसाया एवं संविदा से सब को बहुत दूर तक पथभ्रष्ट किया, वे सही धर्म की ओर वापस लौटेंगे और सही बात को समझेंगे कि बिन खंडनात्मक और अविरोधी बहाउल्लाह के संविदा और उसकी दैवी ढंग से प्राप्त संतान, ''संविदा का शिशु''- अब्दुल बहा की वसीयत और विधान अमर है, अविनाशी है और वह, धर्म के जीवंत धर्म रक्षक के अंतर्गत, प्रशासनात्मक आदेश की सारी संस्थाओं को पुन: स्थापित करें, जो शोगी अफन्दी ने बहुत जतन और परिश्रम से निर्मित की थीं, उस पवित्र दस्तावेज के प्रावधानों के अनुसार, और जो ''लंबे अर्से तक'' उनके अथक परिश्रम की उपयुक्त अभिषेक समान सिद्धि थी, जिसे उन्होंने अपने मंत्रालय के समापन वर्षों के दौरान ऐसे आनंदपूर्ण शब्दों में उद्‌घोषित की थी और उत्साह एवं अत्यंत खुशी के साथ व्यक्त की थी, ''धर्म के विश्व केन्द्र में'' उसकी सर्वोच्च संस्थाओं का तंत्र'' एवं ''प्रकट आदेश के सर्वोच्च तंत्र'' सब कुछ एक बार फिर संविदा की विजय के साथ उनकी दैवी ढंग से प्राप्त कीर्ति, गौरव और पूर्णत्व पुन: स्थापित हो जाएँगे.

Joel Bray Marangella

जोएल ब्रे मारेन्जेला

बहाई धर्म के तीसरे धर्म रक्षक

लखनऊ के स्थानीय परंपरागत (ऑर्थोडोक्स Orthodox) बहाई मन्डल की ओर से उद्घोषणा (Announcement)

लगभग ६० वर्षो के अंतराल के बाद, वर्ष २००१ में धर्म रक्षक जोएल बी. मारएन्जेला के अंतर्गत लखनऊ का स्थानीय मन्डल पुन: स्थापित हुआ. हम मानते हैं कि जब अधिक से अधिक लोग सत्य को स्वीकार करेंगे और परंपरागत (ऑर्थोडोक्स) बहाई धर्म के साथ जुड़ेंगे तब निश्चित रूप से मन्डल अत्यधिक सक्रिय मन्डल बनेगा.

हम तीसरे धर्म रक्षक के अत्यंत ऋणी हैं, जिन्होंने बहाउल्लाह के धर्म को विनाश से बचा लिया है और सही मार्ग की ओर चलने के लिए हमारा मार्गदर्शन किया है.

हम भारत के अस्थायी राष्ट्रीय बहाई मन्डल के भी आभारी हैं जिन्होंने मन्डल के गठन के लिए दो बार हमसे मुलाकात की और ऐसी महत्त्वपूर्ण किताब के प्रकाशन में सहायता की, जो बहाई धर्म के इतिहास में लखनऊ सभा का नाम सुवर्णाक्षरों में लिखवायेगी.

हम अपना हार्दिक आभार के लिए श्री आर. उपाध्याय और श्री ए. शर्मा, जिन्होंने मन्डल के पुनर्गठन में कोई कसर उठा नहीं रखी.

बहाउल्लाह के विश्व आदेश के लिए हमारा कार्य इस प्रकार आगे बढ़ना चाहिए जो किस को डरायेगा नहीं और किस से डरेगा भी नहीं.

ना भय देत काहूको ना भय जानत आप.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
obc_lucknow@rediffmail.com

भारत के परंपरागत (ऑर्थोडोक्स) बहाइयों के प्रकाशन

१. **बहाई फेथ अॅन्ड डायरी ऑफ मैसन रेमी (दि सेकंड गार्जियन ऑफ बहाई फेथ)**
''एकस्ट्रैक्ट्स फ्रोम डेली ऑब्ज़र्वेशन ऑफ दि बहाई फेथ मेड टु दि हैन्ड्स ऑफ दि फेथ इन दि हॉली लैन्ड'' बाइ मैसन रेमी व्हाइल सर्विंग ऐज़ अ मेम्बर ऑफ दि बॉडी ऑफ नाइन हैन्ड्स ऐट दि वर्ल्ड सेंटर फॉलोइंग दि पासिंग ऑफ शोगी अफन्दी.

२. **अनआन्सर्ड लेटर्स टु रूहिये खानम**
बाइ जोएल ब्रे मारएन्जेला
(दि थर्ड गार्जियन ऑफ दि बहाई फेथ)

३. **दि ऑर्थोडोक्स बहाई फेथ - ऐन इन्ट्रोडक्शन**
पब्लिश्ड बाइ NBC ऑफ इंडिया

४. **दि बहाई गार्जियन्स**
ब्रीफ हिस्टरी टेकन फ्राम दि राइटिंग्स ऑफ दि थर्ड गार्जियन

५. **प्रथम धर्म रक्षक शोगी अफन्दी के निधन के बाद सन् १९५७ में लखनऊ (भारत) की स्थानीय आध्यात्मिक सभा का अनोखा कदम** (Hindi & English)

न्यूज़ लेटर्स

१. हेरल्ड ऑफ दि कावेनेन्ट

२. कावेनेन्ट

अधिक जानकारी के लिए कृपया देखिए:

http://members.iinet.net.au/~guardian/
The Guardian of the Faith Bahá'í

http://www.rt66.com/~obfusa/council.htm
National Bahá'í Council of the United States

http://www.truebahai.com/spiritual/
Jeff Goldberg's Page - The Mystical Teachings of Bahá'u'lláh

http://lavaleo.tripod.com/cgi-bin/membership.htm
Canadian Orthodox Bahá'í Website

http://www.bahai-orthodox.org/
Orthodox Bahá'ís of Northern California

http://www.rt66.com/~kjherman/5Bahai.htm
Karen Jo Herman's Bahá'í Page

http://www.aros.net/~multiman/index.html
Ian Roebuck's Bahá'í Page

http://members.iinet.net.au/~guardian/india.html
Orthodox Bahá'í Council of India

http://www.aros.net/~multiman/Welcome.html
OBF of Greater Salt Lake City Area

http://bahai-guardian.com/obfisa.html
The Orthodox Bahá'í Faith In South Australia

http://www.truebahai.com

http://www.rt66.com/~kjherman/Bahai/RB_links.html
Orthodox Bahá'í of Rosewel, New Mexico

भारत के परंपरागत (ऑर्थोडोक्स) बहाइयों की वेबसाइट्स

http://www.bahaisorthodox.com
Orthodox Bahá'í Council of India

http://www.bahaisorthodox.com/bangalore/index.htm
Orthodox Bahá'í Council of Bangalore

http://www.bahaisorthodox.com/chennai/index.htm
Orthodox Bahá'í Council of Chennai

http://kolkatta.white.prohosting.com
Orthodox Bahá'í Council of Kolkata

http://obcdelhi.bravehost.com
Orthodox Bahá'í Council of Delhi

http://www.obclucknow.com
Orthodox Bahá'í Council of Lucknow

परंपरागत (ऑर्थोडोक्स) बहाई घोषणापत्र
ORTHODOX BAHÁ'Í DECLARATION CARD

मैं बहाई धर्म में अपनी स्वीकृति घोषित करता हूँ और विशेष रूप से आस्था के लिए निम्न लिखित प्रतिज्ञा करता हूँ :

कि बाब ईश्वर का स्वतंत्र अवतार थे, जिन्होंने १८४४ में बहाई धर्म का प्रवर्तन किया और बहाउल्लाह के पूर्वगामी -''वह जिसका ईश्वर अविर्भाव करेगा.''

कि बहाउल्लाह, बहाई रिविलेशन के लेखक ''सभी युगों के वचन हैं,'' और ईश्वर का सर्वोच्च अवतार हैं.

कि अब्दुल-बहा, बहाउल्लाह के सब से बड़े बेटे बहाइयों के साथ उसके संविदा के नियुक्त केंद्र हैं, उसके पवित्र शब्द के एकमेव व्याख्याता हैं, वे धर्म के पूर्ण अनुकरणीय और दैवी ढंग से प्राप्त वसीयत और विधान, जिसके अपरिवर्तनीय प्रावधान बहाउल्लाह के विश्व आदेश का शासन पत्र स्थापित करते हैं. तब तक जारी रहेगी जब तक उनकी संविदा बाकी रहेगी.

कि शोगी अफन्दी बहाई धर्म के प्रथम धर्म रक्षक थे, जिनकी नियुक्ति अब्दुल-बहा की वसीयत और विधान के अनुसार हुई थी और उनको बहाउल्लाह के व्यक्त शब्दों का व्याख्याता अधिकृत किया था. उस विधान में वर्णित विश्व न्याय मन्दिर स्थायी पवित्र प्रमुख का पद दिया था. और उनके प्रति सभी बहाइयों ने अपनी आज्ञाकारिता समर्पण भाव और धर्म के बारे में अपने आपको अधीनस्थ घोषित किया था.

कि शोगी अफन्दी ने ''अपने ही जीवनकाल में'' अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था क्योंकि अब्दुल बहा की वसीयत और शासनपत्र के प्रावधानों के अनुसार ऐसा करने में बाध्य थे और धर्म के द्वितीय धर्म रक्षक मैसन रेमी ने योगानुयोग शोगी अफन्दी के निधन के साथ धर्म रक्षक पद स्वीकार किया.

कि जोएल ब्रे मारएन्जेला बहाई धर्म के तीसरे जीवंत धर्मरक्षक हैं, जिनकी नियुक्ति द्वितीय धर्म रक्षक ने ''अपने ही जीवनकाल में''अब्दुल-बहा की वसीयत और विधान में दी गई सूचनाओं के अनुसार की सभी बहाई लोग जो बहाउल्लाह के संविदा, और अब्दुल बहा की वसीयत और विधान के वफादार है उनकी (यानी) ''धर्म के केन्द्र'' की ओर आएँ (लौटें).

नाम : ______________________________

पता: ______________________________

____

जन्म दिनांक: ______________ घोषणा दिनांक: ______________

____

इस घोषणापत्र को स्पष्ट एवं पूर्ण रूप से भरें और इस पते पर डाक से भेजें: प्रोविज़नल नेशनल बहाई कौंसिल, पो.बॉ.नं. ५४, वसई रोड, जिला-थाणे-४२१ २०२, महाराष्ट्र, भारत. ई-मेल: parikhsec@yahoo.com